बाबाजी की अमर कथा

चौथा अध्याय

''जय बाबे दी''

बाबाजी माई रत्नो के घर अलख जगाके कहने लगे माता जी मै आपकी सेवा मे आया हूँ। आप अपनी गउंऐ चराने के लिये मुझे रख लिजिये । मै आपसे इसके बदले कोई धन–अथवा मूल्य नहीं लुगा। माई रत्नो ने कहां तुम छोटीसी उम्र में ही साधू हो गये हो तुम्हारे माता–पिता और घर–परिवार कहां है।

बाबाजी ने कहा साधूओ के कोई घर नही होते, साधू तो जहां भी डेरा जमा ले वही उनका घर–परिवार होता है। मॅ रत्नो ने बाबाजी से कहां बेटा तुम्हारा अती सुन्दर स्वरूप है सिर के बाल भी सोने की तरह चमक रहे है और शरीा भी बहुत कोमल है तुम गउंऐ कैसे चराओगे बाबाजी ने माँ से कहां आप मुझे इतना नाजुक न समझे मै आगे भी गउऐ चराने की सेवा करता रहा हूँ माँ मुझे गउं सेवा की आज्ञा दे, जब बाबाजी ने माँ कह कर पुकारा तो माई रत्नो की आंखों में आंसू आ गये । क्योंकि माई रत्नो की कोइ सन्तान नहीं थी, तो मई रत्नो ने कहां लो बेटा गउंयें सभालों तो बााबाजी माई कि गउंये लेकर जंगल में आ गये यहां पर एक बडा सा बड (वट वृक्ष) होता था जो आज भी मौजूद है बाबाजी गउंओं को घास में छोडकर आप वट वृक्ष के नीचे समाधी लगाकर प्रभु भक्ति में लीन हो जाते थें सॉयः के समय गउओं को बुलाकर घर भेज दिया करते थे। प्रातः गउऐ पुनः बाबाजी के पास आ जाती थी । माँ रत्नो के मन में आया जो बालक मेरे पास गउ सेवा करने को आया है उसके लिये रोटियॉ और लस्सी ले जानी चाहिए सो माई रोटियॉ और लस्सी लेकर बाबाजी के पास आ गयी।

बाबाजी समाधी लगाकर बैठे हुये थे, माई रत्नो ने कहां बेटा लो भोजन कर लो कह कर माताजी ने रोटियॉ और लस्सी वृक्ष ने नीचे रख दी और वहीं बाबाजी की चिप्पी में लस्सी डाल दी ऐसे माँ रत्नो रोज रोटियॉ व लस्सी वृक्ष के नीचे रख जाती बाबाजी हर समय भक्ति मे लीन रहते थे एक दिन बाबाजी का पूर्ण प्रेम देखकर प्रभु शंकर जी वरदान देने तथा पिछले जन्म जो कलयुग में दर्शन देने का वचन दिया था वह पुरा करने को आ गये बाबाजी को दर्शन देकर शंकर जी ने कहां जो तुम्हारे मन मे आया है मुझ से वही वर्दान मांगलो मै तुम्हारी भक्ति से अति प्रसन्न हूँ बाबाजी ने कहॉ प्रभु मुझे केवल आपके दर्शन की चाहना थी आपने मुझ पर महान कृपा करके कलयुग मे भी दर्शन दिये, मुझे आप अपने चरणो का दास बनाये रखे और हर समय मै आपका गुण–गान करता रहूँ, शंकर जी ने आर्शिवाद देकर कहां हे बालक आप द्वापर युग के समय पिछले जन्मो मे भी मेरा घोर तप करते रहे हो मैने तुम्हे उस समय भी दर्शन दिये थे अब आप कलयुग में भी पूर्ण श्रद्धा से भक्ति कर रहे हो इस लिये तुम्हारा नाम अमर सिद्ध बाबा बालक नाथ दूधाधारी, पौणाहारी के नाम से प्रसिद्ध होकर संसार में चम्कता रहेगा।

इस कलयुग के समय तुम्हारे नाम की बडी पुजा होगी जो भक्त जन आपकी शरण में आयेगे उनके सब मनोरथ निश्च ही पूर्ण होगें यह वरदान देकर प्रभु शंकर अंतरध्यान होगये । बाबाजी हर रोज गउंओं को चरने के लिये वनखण्डी में छोड कर आप प्रभु भक्ति मे लीन हो जाते थे । बाबाजी का इस तरह बहुत समय व्यतीत हो गया । जब पुरे बारह वर्ष हो गये तब अपना चमत्कार दिखाने के लिये गउओं को खेत मे भेजकर आप

भक्ति मे लीन हो गये गउओं ने जमींदारो की फसले उजाड दी जमींदारों ने माँ रत्नो के पास जाकर बहुत उलहाने दिये की तुम्हारा बालक तो समाधी लगाकर बैठा रहता है और गउओं ने सभी खेत उजाड दिये है। इतना सुनकर रत्नो माँ क्रोध में आ गयी और कहने लगी बेटा आज तुम्हारे कारण मुझे गॉव वालो से बहुत उलहाने मिले है। बारह वर्षो से तुम्हे इस लिये पाल रही थी कि मुझे यह दिन देखना पडे और बाबाजी को बहुत खरी–खोटी सुनाई बाबाजी माँ से कहने लगे कि माँ मुझे वो खेत दिखा दो जो मेरी गउओं ने उजाडे है मै सूत समेत सारी भरपाई कर दूगां ।

इस बीच गॉव वाले और जमींदार भी वट वृक्ष के नीचे बाबाजी के पास आ गये। जमींदारो और माँ रत्नो के साथ बाबाजी खेत देखने चले तो बाबाजी ने सारे खेत पहले से भी ज्यादा हरे–भरे कर दिये थे । और बाबाजी ने उसी समय अपनी शक्ति द्वारा जो गउऐ जमींदारो ने बडसर थाने मे कैद कर ली थी थाने की दीवार तोड कर वापस बुला ली। यह देखकर जमींदार एवं गॉव वाले अचम्भे मे पड गये तब बाबाजी ने माँ रत्नो से कहां माँ मैने बारह वर्ष तक तेरी गउये चराई है और तेरी सेवा की है और तुने आज मुझे आज उस सेवा के बदले, जो मुझे बारह वर्ष की रोटि–लस्सी के ताने मारे है। तभी बाबाजी अपना चिम्टा उठाकर वट वृक्ष पर मारा तभी वट वृक्ष में से रोटियॉ व लस्सी निकाल दी तभी बाबाजी ने धरती पर चिम्टा मारकर बारह वर्ष की लस्सी के फव्वारे चला दिये और कहने लगे ये लो अपनी बारह वर्ष की रोटियॉ व लस्सी तथा अपनी गउये भी संभाल लो जिनके लिये तुमने मुझे इतने ताने मारे है। अब मै यहॉ नही रहूँगा।

माँ रत्नो बाबाजी के हाथ जोडकर विनय करने लगी कि हे बेटा मैने तुझे बारह वर्ष अपने बेटे से भी ज्यादा प्यार किया हैं । अब छोटी सी बात के लिये मुझे छोड कर जा रहे हो। तुम्हारे सिवा मेरा इस संसार मे कौन है। मै किस के सहारे रहूगी। माँ रत्नो ने बहुत जोर लगाया किन्तु बाबाजी न माने शाह तलाई से द्वियोट सिद्ध जाते हुये एक छोटासा मन्दिर आता है बाबाजी वहॉ जाकर समाधी मे लीन हो गये। पिछे बाबाजी के वियोग में गउओं ने घास चरना छोड दिया। माँ रत्नो बाबाजी को पहाडो–जंगलो में खोजती रही और कहती रही अगर तुम नहीं आये तो मै तुम्हारे वियोग मे भूखी–प्यासी मर जाउगी जब माँ रत्नो ने इस तरह आवाजे मारी तो बाबाजी माँ की पुकार सुनकर फिर वापस आ गये और माँ से कहने लगे कि हे माँ आपकी गउये इस तहर चराता रहूगा और आप मेरे लिये रोटियॉ–लस्सी लेकर न आये तभी मै यहां रहूगा। इसी तरह बाबाजी गउंओ को चराने के लिये वनखण्डी मे जाते और गरूना झाडी के नीचे बैठकर भक्ति करते जहां आज गरूना झाडी के नाम से प्रसिद्ध बाबाजी का मन्दिर है।

''जय बाबे दी''